डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

वैष्णव चेतना किसी भी विद्रोही चेतना से बड़ी : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

राष्ट्रबोध के नायक थे माखनलाल चतुर्वेदी : उमेश कुमार सिंह

– माखनलाल चतुर्वेदी पर संगोष्ठी का संपन्न
– विभिन्न सत्रों व संदर्भों में माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य पर हुआ चिंतन–मनन

उदयपुर, 1 सितम्बर। "वैष्णव चेतना किसी भी विद्रोही चेतना से बड़ी है क्योंकि उसका मूल है पराई पीर को जानना। माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन और कृतित्व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभावी साहित्यिक स्वर है। इस स्वर की मुख्य चेतना वैष्णव है और माखनलाल चतुर्वेदी के प्रेरक प्रतीक कृष्ण हैं। कृष्ण जो विरोधाभासी व्यक्तित्वों का समुच्चय है और इस तरह एक व्यापक चरित्र हैं।" ये विचार साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और राजस्थान साहित्य आकदमी उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में साहित्य अकादमी के एकात्म सभागार में शुरू हुई "माखनलाल चतुर्वेदी –व्यक्ति और अभिव्यक्ति" विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि प्रख्यात कवि, आलोचक एवं संपादक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी की गीतात्मक चेतना और उनके गीत ऐसे हैं कि छायावाद के अन्य रचनाकारों के पास भी ऐसे गीत नहीं मिलते। उन्होंने 15 वर्ष की आयु में कृष्ण भक्ति की कविता लिखी और तब से लेकर अंतिम समय तक कृष्ण उनकी रचनाओं से बाहर नहीं हुए। कृष्ण के पूर्णावतार को आत्मसात कर उनकी चेतना को बढाया। उनकी अमरता प्राप्त कविता 'पुष्प की अभिलाषा' तो आज तक लोगों की जुबान पर चढ़ी हुई है। 'कैदी और कोकिला' क्रांतिकारियों को बहुत प्रिय थी। परिवेश प्रेम, प्रकृति प्रेम, मानव प्रेम का स्तर अद्भुत था। भक्ति चेतना वाले कवि ने विद्रोह की कविता लिख सबका दुलार पाया। बहुत कम लोग जानते हैं कि गाँधी पर पहली कविता उन्होंने तब लिखी जब गाँधी जी विदेश से भारत नहीं लौटे थे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्य आकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं में भारतीय समाज को राष्ट्रीय चेतना से न सिर्फ जोड़ने का काम किया बल्कि आदर्श जीवन मूल्यों और भारतीय संस्कृति के तत्त्वों से भी जोड़ दिया। बीज वक्तत्व देते हुए साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी कुशल कवि, श्रेष्ठ गद्यकार, बेबाक संपादक, समर्पित कांतिकारी, अद्भुत वक्ता और कुल मिलाकर एक संपूर्ण भारतीय आत्मा थे। उनका विराट व्यक्तित्व और विशद कृतित्व भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है जिसका बार–बार मूल्यांकन करने से हमें विभिन्न जीवन स्थितियों और चुनौतियों का सामना करने की दृष्टि प्राप्त हो सकती है।

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

समारंभ सत्र की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष इंदुशेखर तत्पुरूष ने पं. माखनलाल चतुर्वेदी की रचनात्मक प्रतिभा की चर्चा करते हुए कहा कि अधिकांश राष्ट्रवादी चिंतकों और साहित्यकारों को हिंदी के तथाकथित आलोचकों ने माखनलाल चतुर्वेदी को विचारणीय ही नहीं माना और उनके अनमोल और अति आवश्यक साहित्य के साथ छल किया है। यह कार्यक्रम हिंदी आलोचना की क्षतिपूर्ति के रूप में आप स्वीकार कर सकते हैं। उन्होंने माखनलाल चतुर्वेदी के कवि रूप, निबंधकार रूप और उनके वक्तारूप को विस्तार से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी जैसी विभूतियाँ ही किसी देश के साहित्य को अमरता प्रदान करने में सहायता करती हैं। माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन और कृतित्व भारतीय वांग्मय का उज्ज्वल अध्याय है। गाँधीजी ने उनकी वाणी के लिए कहा था, 'हम सब लोग तो बात करते हैं, बोलना तो माखनलालजी जानते हैं।'

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने अतिथियों तथा बड़ी संख्या में मौजूद साहित्यकारों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का विषय प्रवर्तन किया और माखनलाल चतुर्वेदी के बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न स्वरूपों को संक्षेप में रेखांकित किया। समारंभ सत्र के अंत में राजस्थान साहित्य अकादमी के सचिव विनीत गोधल ने सभी विद्वान अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित किया और यह विश्वास व्यक्त किया कि दो दिनों तक चलने वाली इस संगोष्ठी में, विभिन्न विचार सत्रों में अधिकारी विद्वान माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व और कृतित्व के बहुत सारे आयामों से साहित्य प्रेमियों को परिचित कराएँगे।

प्रथम पर्व में 'कवि माखनलाल चतुर्वेदी : एक भारतीय आत्मा' विषय पर सत्राध्यक्ष देवेंद्र दीपक ने कहा कि सच्चे अर्थों में उनके लेखन में भारतीयता झलकती है। उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि कोई भी लेखक अपने राष्ट्र को केंद्र में रखकर रचना करे तभी वह सच्चे अर्थों में आने वाली पीढ़ी का प्रेरणा स्रोत बन सकता है। विशिष्ट वक्ता चमनलाल गुप्त ने माखनलालजी की रचनाओं का मौलिक पाठ करते हुए कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में एक पूरी पीढ़ी का विकास उन्हीं की रचनाओं से हुआ। वे किसी वाद विशेष से बँधे हुए नहीं थे, उनका पुनर्मूल्यांकन होना चाहिए। आलेख–पाठ करुणाशंकर उपाध्याय व अवनिजेश अवस्थी ने किया। करुणाशंकर उपाध्याय ने कहा कि वे डंके की चोट पर लिखते थे, जिसमें अभिव्यक्ति, व्यंजकता और अर्थछटा अद्‌भुत थी। उन्होंने राणा प्रताप के शोर्य पर भी लिखा तो शिवाजी के पराक्रम पर भी। पत्रकार व चिंतक अवनिजेश अवस्थी ने कहा कि यदि माखनलाल चतुर्वेदी का सही मूल्यांकन नहीं हुआ है तो उसके जिम्मेदार कौन हैं, इतिहास के पुनर्लेखन की बात गलत नहीं है। तथ्यों को छुपाने की बजाय बताने से उनका मर्म ज्यादा सामने आता है। अध्यक्षीय उद्‌बोधन देवेंद्र दीपक ने दिया।

द्वितीय पर्व में 'गद्यकार माखनलाल चतुर्वेदी : पुनर्मूल्यांकन की परंपरा' पर चर्चा करते हुए सत्र अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने कहा कि जब मूल्यांकन का दौर आया तो मार्क्सवादी समीक्षकों का जोर हुआ। तब कहा गया कि राष्ट्रवाद संकीर्ण सोच है। ऐसे में उनकी उपेक्षा हुई और वे पिछड़ गए। उनका गद्य ब्रिटिश शासन बनाम भारत की आजादी था। वे ओज, ऊर्जा और शौर्य के कवि थे। उनके साहित्य का पुनः अवलोकन हो, नाटक खेले जाएँ व आधुनिक उपयोगिता के संदर्भों को खोजा जाए। विशिष्ट वक्ता श्रीराम परिहार ने कहा कि वर्तमान में माखनलाल चतुर्वेदी के लेखन का उतना ही महत्त्व है जितना कि आजादी के आंदोलन से लेकर सत्तर के दशक में उनके अवसान तक था। आवश्यकता है कि उनके समग्र लेखन को पुनः प्रतिष्ठापित किया जाए। वे एक प्रतिबद्‌ध पत्रकार के साथ ही

क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी व संस्कृतिनिष्ठ कवि थे। आलेख–पाठ करते हुए नीरजा माधव ने कहा कि उनकी लेखनी वैश्विक इन अर्थों में थी कि तिब्बत जैसा देश उनकी दृष्टि में एक बफर स्टेट का दर्जा रखता था। आज के मूल में भी यही आवश्यक है कि भारत–चीन सीमा–विवाद को इस संदर्भ में रखकर हल किया जा सकता है। ओम निश्चल ने भी आलेख–पाठ किया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन उदय प्रताप सिंह ने दिया व संचालन कुंदन माली ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए मध्यप्रदेश साहित्यिक परिषद भोपाल के निदेशक उमेश कुमार सिंह ने कहा कि – माखनलाल चतुर्वेदी का राष्ट्रबोध वही था जो हजारों वर्ष पहले हमारे ऋषि मुनियों का था। गांधीजी के अतिप्रिय होने पर भी वे वैचारिक दृष्टि से लोकमान्य तिलक के अधिक नजदीक थे। साहित्य और पत्रकारिता के अपने अनुष्ठान में वे शब्दों को चेतना में डुबो कर कलम तक लाते थे। उनमें भारतीय संस्कृति को ढूंढने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे तो खुद भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विषयों पर काम करने वाले विद्‌वानों और मनीषियों को संस्कृतिककर्मी नहीं कह कर संस्कृतिधर्मी कहा जाना चाहिए। मूलतः साहित्यकर्मी साहित्यधर्मी ही होता है। माखनलाल चतुर्वेदी शास्त्र और शस्त्र दोनों को साथ लेकर चलते थे। आज भी दोनों को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। वे हमेशा कहा करते थे कि भारतीयता या हमारी परम्पराओं में जीना दकियानूसी नहीं, गर्व की निशानी है। हम आज अंधे उपदेशक हो गए हैं मगर उनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। उनका कहा आज भी समीचीन है कि साहित्य कोरा धंधा नहीं है।

आलोचक-रचनाकार कलकत्ता विश्वविद्‌यालय के सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर प्रेमशंकर त्रिपाठी ने आलेख पाठ में कहा कि माखनलाल चतुर्वेदीजी में आपदमस्तक भारतीयता झलकती थी। उनके लिए बार-बार कहा जाता था कि धोर बंदिशों के उस दौर में वे उस समय भी आजाद थे, हम आज भी नहीं हैं। वे संपूर्णतावादी भारतीयता के प्रखर उन्नायक थे। इष्टदेव सांकृत्यायन ने कहा कि उनका नाटक *कृष्णार्जुन युद्‌ध* अद्‌भुत था। *पुष्प की अभिलाषा* सांस्कृतिक निष्ठा की याद दिलाती है। उन्होंने कई ऐतिहासिक प्रसंग सुनाकर माखनलाल चतुर्वेदी की मानवतावादी सोच को पुष्ट किया। उनकी सांस्कृतिक सचेतता और विनम्रता अद्‌भुत थी। उनका उपनाम ही भारतीय आत्मा मान लिया गया है। हिन्दी भाषा को लेकर वे सदा लडे, आजादी से पहले भी, बाद भी। शिक्षा को लेकर हम आज कहते हैं कि बच्चों को पीटा नहीं जाना चाहिए। यह सब 1923 में उन्होंने शिक्षक सम्मेलन में कह दिया था।

रेखा खराडी ने अपने आलेख में स्त्री विमर्श के प्रश्न उठाए व कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी सदा इसके हिमायती रहे। डॉ दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने माखनलाल चतुर्वेदी के आवाज वाला एक ऑडियो क्लिप सुनाया जिसमें वे स्वयं पुष्प की अभिलाषा कविता का पाठ करते सुनाई दिए। संचालन डॉ शिवशरण कौशिक ने किया।

चतुर्थ पर्व में ख्यातनाम साहित्यकार अरूण कुमार भगत ने आलेख पाठ करते हुए कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय चेतना के शंखनाद के साथ ही पत्रकारिता के माध्यम से रचनाकारों की बहुत बड़ी श्रृंखल भी खड़ी की। आजादी से पहले 34 वर्ष और आजादी के बाद 21 वर्ष अर्थात कुल 55 वर्षों तक राष्ट्र चेतना की पत्रकारिता की। आजादी के बाद भी उनकी पत्रकारिता के तेवर

उतने ही मुखर थे जितने आजादी से पहले। आलेख पाठ करते हुए शिक्षाविद लेखिका क्रांति कनाटे ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी कहा करते थे कि यह कैसी शिक्षा है जो बीस रूपए महीना कमाने वाला नकलनवीस बनाती है। आज हम इसकी तुलना साइबर कुली से कर सकते हैं। सौ बरस पहले जो बातें उन्होंने कहीं-लिखीं वे आज भी इतनी प्रासंगिक हैं कि यदि कथन का कालखंड उद्घाटित ना करें तो पता ही नहीं चलता कि यह तब कही गईं थीं या आजकल में। मीडिया टीआरपी के पीछे भाग रहा है, खबर ने विश्वसनीयता खो दी है। ऐसे में जरूरत है तो माखनलाल चतुर्वेदी की अंतरदृष्टि की जिससे समाज और पत्रकारिता को पुनः आलोकित किया जा सके। विशिष्ट अतिथि कुमुद शर्मा ने कहा कि अंतःकरण के आयतन को बढाने वाली पत्रकारिता माखनलाल चतुर्वेदी ने की मगर आज इसने घोर व्यावसायिक रूप ले लिया है। पत्रकारिता संस्थान से जुडे प्रमुख जब इस तरह की संगोष्ठियों में आते हैं तो सीना तान कर कहते हैं कि हम बिजनेस हाउस चलाते हैं कि हम सेवा नहीं करते। वे भूल जाते हैं कि पत्रकारिता सच की ताकत से चलने वाला व्यवसाय है। सीमेंट धनिया बेचने का व्यवसाय नहीं। आजकल मीडिया का सच अश्वत्थामा का सच लगता है। इस कर्मवीर ने 12 बार जेल जाकर और 63 बार तलाशियों से गुजर कर भी कभी पत्रकरिता में मूल्यों से समझौता नहीं किया।

अध्यक्षता करते हुए पद्मश्री विष्णु पंड्या ने कहा कि चतुर्वेदी ने देश की पीडा को समझा और हमेशा अपनी पीडा को परे रख कर देश की पीडा को कालजयी शब्दों से आवाज दी। उनकी रचनाओं को गुजराती में अनूदित करने का प्रयास किया जाएगा।

संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए विख्यात रचनाकार-चिंतक नंदकिशोर आचार्य ने माखनलाल चतुर्वेदी के रचनाकर्म की प्रासंगिकता को समकालीन लेखकों से उनके परस्पर संबंधों के आलोक में रख कर पुनर्रेखांकित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी रचनाकार को समय, संस्कृति, परिवेश के परिप्रेक्ष्य में ही जानने-समझने विष्लेशित करने की जरुरत है। माखनलाल जी की प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि उनके समय में मौजूद सवालों तथा समस्याओं जुड़ती है और यह प्रत्येक कालखण्ड में रचनाकारों के लिए चुनौती प्रस्तुत करते है। उन्होंने माखनलाल जी के संदर्भ में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रचिंतन की विभिन्न अवधारणाओं को उनके समयक सन्दर्भों में ही समझा जाना चाहिए।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए विख्यात विद्धान डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने माखनलाल जी के व्यक्तित्व के अनछुए, अनजाने, अलक्षित पक्षों की ओर ध्यान दिलाते हुए इस तथ्य पर विशेष जोर दिया कि किसी भी रचनाकार के रचनाकर्म का मूल्यांकन करते समय लेखक के व्यक्तित्व को ही केन्द्र में रखना चाहिए। साहित्य अकादेमी के प्रतिनिधि अनुपम तिवारी ने उक्त दो दिवसीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। राजस्थान साहित्य अकादमी अध्यक्ष इंदुशेखर तत्पुरुष ने इस संगोष्ठी की सफलता व सार्थकता में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में निमित्त बने तमाम साहित्यकारों तथा अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। उक्त कार्यक्रम का संचालन सुरेन्द्र सिंह राव ने किया।